ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 176-178

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

ब्रिटिश नौकरशाही के व्यवहार का असहयोग आंदोलन के सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ0 बीना जोशी

असिस्टेंट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, राजकीय बालिका पी0 जी0 कालेज, हल्दवानी (उत्तराण्ड) भारत

Received-03.02.2023, Revised-09.02.2023, Accepted-14.02.2023 E-mail: beenajoshi17@gmail.com

सारांशः ***प्रस्तुत शोध लेख इस पूर्व मान्यता पर आधारित है कि 1858 से लेकर 1930 या उससे भी आगे तक की 'भारतीय राजनीति' जिस पर राष्ट्रीय आन्दोलन की क्रमबद्ध कहानी छायी रही, वास्तव में भारत में अंग्रेज नैकरशाही की विशिष्ट मनोवृत्ति का नतीजा थी। लार्ड मेमो से लेकर कर्जन तक का भारत का इतिहास' राजनीति के खेल का इतिहास है। विलियम हन्टर की पुस्तक 'The India Musalmans' मुसलमानों के प्रति नौकरशाहिक प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती है।'***

एम0ए0ओ0 कालेज, अलीगढ आन्दोलन, बंगाल का विभाजन आदि ब्रिटिश नौकरशाही की मानसिकता की ही उपज थें। नौकरशाही की मनोवृत्ति के कारण मुसलमानों में आश्चर्यजनमक बदलाव आया। ''साम्प्रदायिकता' ब्रिटिश नौकरशही की मानसिकता की उपज थी। साम्प्रदायिकता का दैव्य भारत विभाजन के उपरांत भी नही मरा है।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय राजनीति, राष्ट्रीय आन्दोलन, नौकरशाहिक प्रवृत्ति, आन्दोलन, अदालत, समर्थन, पदाधिकारी।

परिकल्पना–अध्ययन– 1857 के विद्रोह के समय ही ब्रिटिश सेवी–वर्ग ने भारतीय नागरिकों, सैनिकों की मनःस्थिति को पंगु बनाने का प्रयास किया। इस मनःस्थिति का एक उदाहरण कुमाऊँ में ही देखने का मिलता है। यहां 'कुली बेगार' की प्रथा ने आम कुमाऊँ में ही देखने को मिलती है। यहा 'कुल बेगार' की प्रथा ने आम कुमाऊँवासियों की जिन्दगी को निरीह बना दिया था। अंग्रेज अधिकारी व उनकी पत्नियां निर्धन लोगों के कन्धों पर चढ़कर लंबी यात्राऐं करती थी वह भी बिना पैसे के।[2] इसी तरह रानीखेत का अंग्रेज एस0डी0एम अदालत में बैठकर भारतीयों के मुह पर फाईल मारता था जिसके फलस्वरूप उसे अपनी नाक से हाथ धोना पड़ता था।[3]

महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन तथा खिलाफत अन्दोलनों को तोड़ने के लिए तथा हिन्दू व मुसलमानों के मध्य दरार पैदा करने के लिए ब्रिटिश नौकरशाही ने अत्यंत घिनौना तथा झूठे प्रचार किए। यहां तक कि यह भी झूठा प्रचार किया गया कि अलीबंधु जैसे नेता भारत मे इस्लामी राज्य की पुर्नस्थापना करना चाहते थे और वह अपनी इस योजना को साकार करने के लिए अफगानिस्तान के अमीर से साठ–गाठ करने मे लगे हुए है।

मोहम्मद के भाषणों को तोड़–मरोड़ कर इस तरह प्रस्तुत किया जाता कि किसी तरह हिन्दू मुसलमानों पर सन्देह करने लगे तथा पान इस्लामाबाद के प्रेत से भयभीत होकर मुसलमानों का समर्थन करना छोड़ दे।[4] अंग्रेज नौकरशाही असहयोग आन्दोलन को नही रोक सकी, लेकिन चौरीचौरा काण्ड उनके लिए वरदान साबित हुआ।

भारत में ब्रिटिश शासन को अब यह पूरी तरह से आभास हो चला था कि हिन्दूओं का अब एकमात्र लक्ष्य स्वराज रह गया है तथा वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर रूख अपना सकते हे। अनिवार्य था मुसलमानों का समर्थन प्राप्त किया जाय। पत्र व्यवहार नौकरशाहों की मनोवृत्ति को स्पष्ट करता है। 'मेरी दृष्टि में मुस्लिम जनमत के प्रति रियायती दृष्टिकोण रखना कितना महत्वपूर्ण है।[5]'' खिलाफत आन्दोलन के समाप्ति के पश्चात् बन्दी नेताओं की रिहाई का कार्य प्रारम्भ हुआ। संयुक्त प्राप्त (वर्तमान यू0पी) के सचिव क्रीकर का गृह विभाग को पत्र 'हमे उन बन्दियों को तुरन्त रिहा कर देना चाहिए जिन्हे विशेष परिस्थितियों में बन्दी बनाया गया है।[6] लेकिन मेलकम हैली बन्दियों की रिहाई के दृष्टिकोण से सहमत नही दिखायी देता। वायसराय रीडिंग को पत्र में लिखा ''वर्तमान क्षणों में बन्दियों की रिहाई से कोई फयदा नही।[7] वायसराय रीडिंग हेली के पत्र से सहमत थे। लिखा ''मै आपकी धारणाओं व विचार से पूरी तरह सहमत हूँ।[8] हेल ने रीडिंग के प्रत्युत्तर में कहा 'अपराध के कारणों के पर्याप्त प्रमाण नहीं है निःसन्देह हमे उनकों तुरन्त रिहा कर देना चाहिए।[9]

कांग्रेस व मुस्लिम लीग के प्रति नौकरशाहिक मनोवृत्ति– अंग्रेज पदाधिकारी कांग्रेस की गतिविधियों को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। 'भारत के राजनीतिक विकास' नामक लेख में इर्विन ने लिखा है। ''शुरू के दिनों से ही कांग्रेस हिन्दू संगठन रहा है।[10] हिन्दुओं को पथ से विचलित कर मुसलमानों के साथ पक्षपात किया जाना ही अधिकारियों की कूटनीति हो सकती थी। भारत के भूतपूर्व भार सचिव ओलिवियर ने लिखा है 'मुसलमाना हिन्दूओं से विशेषकर बंगालियों से अधिक डोमिनियन स्टेटस पाने के अधिकारी है।[11] ब्रिटिश शासन का बनाये रखने के लिए आवयक था कि कांग्रेस की शक्ति को घटाया जाए तथा हिन्दूओं के विरूद्ध उनके प्रतिद्वन्दी खड़े किए जाए।

मुसलमानों के साथ पक्षपात किया जाना ही अधिकारियों के लिए ही कूटनीति हो सकती थी। ब्रिटिश नौकरशाही के लगभग सभी सदस्य मुसलमानों के समर्थक थे। सर हारकोर्ट बटलर ने उड़ीसा व संयुक्त प्रांत के दंगों के संबंध मे लिखा ''हिन्दू

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

व मुसलमानों के बीव सम्बन्ध कटु हो गये है।[12] बटलर दोनो संगठनों की मनः स्थिति को अच्छी तरह समझता था। ''स्वयं को मुस्लिम लीग के प्रति कृतज्ञता के लिए गर्वित महसूस करता हूँ।[13] बटलर को कांग्रेस की अपेक्षा मुस्लिम लीग से वफादारी की उम्मीद अधिक थी। 1924 में हेली ने लिखा 'हिन्दु सम्प्रदायिक दंगों से अधिक चिन्तित है और व्यवहारिक रूप में उनहोने मुसलमानों को सरकार के हाथों मे छोड़ दिया है..... अगर उन्हें कोई संरक्षण दे सकता है, तो वह ब्रिटिश सरकार।[14]

साइमन कमीशन व नेहरू के प्रति अधिकारिक मत – बटलर के विचार में कमीशन ने 1930 में अपनी जो रिपोर्ट प्रकाशित की वह भारतीयों के लिए अत्यंत प्रगतिशील थी लेकिन किसी भी भारतीय ने इसकी महत्ता को नही समझा तथा गहराई से अध्ययन नही किया। केन्द्रीय सरकार को प्रान्तीय विधान के सन्दर्भ में संसद के प्रति उत्तरदायी नही होना चाहिए।[15] सर हारकोर्ट बटलर ऐसा पदाधिकारी था जिसने मार्ले–मिन्टो सुधारों को कार्यान्वित करने में भारत सरकार को अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी।

साइमन कमीशन पर अपनी पुस्तक में साइमन ने लिखा – 'भारत सरकार को भारत सचिव के माध्यम से नियंत्रित किया जाए ताकि भारत को छोटी–छोटी राजनीतिक इकाइयों में बटने से रोका जा सके।[16] गृह सचिव मेलकम हेली के विचार में ब्रिटिश अधिकारियां को मुसलमोनो से मित्रता बनाए रखनी थी तथा इस नीति का अनुशरण करते हुए पदाधिकारियों ने अपने प्रयास तेज कर दिए। इर्विन ने बर्कनहेड को लिखा–'इस सन्दर्भ में मुस्लिम नेताओं से बातचीत की जाय। मिस्टर जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया है। मुस्लिम नेताओं द्वारा हर तरह के प्रयास जारी है कि उनके समुदाय को हर तरह से सम्मिलित होने से रोका जाएं।[17] जिन्ना के प्रति सेवी–वर्ग की मनोवृत्ति– साईमन कमीशन के बाद जिन्ना ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण छोड़कर साम्प्रदायिक दृष्टिकोण अपना लिया था। एडविन मानटेग्यू जिन्होने 1917 में भारत सचिव का पद संभाला था। उन्होने कई बार भारत की यात्रा की अपने प्रवास के दौरान उन्होने यहां के पर्यावरण, लोगो के रहन–सहन को नजदीक से देखा था। वह जिन्ना के प्रति अत्यधिक आर्कषित थे।

1928 के साईमन कमीशन के प्रति जिन्ना के व्यवहार को रेखांकित करने का कार्य बर्किन हेड द्वारा किया गया। जिसमें उन्होनें जिन्ना को पराधीन मस्तिष्क से सुशोभित किया आगे लिखा 'मै साइमन को सलाह देना चाहूंगा कि वह हर स्तर के महत्वपूण्र व्यक्ति पर नजर रखें। वायसराय इर्विन से विनती कि 'विशेषकर मुसलमानों व दलित वर्ग जो बायकाट में भाग नही ले रहे विशेष ध्यान दिया जाए।[18] द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 7 सितम्बर 1931 को आरम्भ हुआ महात्मा गांधी सम्मिलित हुए। यह बात देखने में आयी कि ब्रिटिश अनुदारवादी ब्रिटिश राजनीतिज्ञ, ब्रिटिश नौकरशाही का जिन्ना जैसे साम्प्रदायिक नेताओं के बीच अनुचित गठबंधन स्थापित हो गया। जो सम्मेलन को किसी भी तरह से सफल नही होन देना चाहते। ऐसी स्थित में सम्मेलन का असफल होना स्वाभाविक था। सर मेलकम हेली इस सम्मेलन के परामर्शात्मक अधिकरी थे के शब्दों मे, 'मुसलमान संपूर्ण रूप से विनीत आचरण के साथ सुगठित थे'।[19] जिन्ना द्वारा नेहरू रिपोर्ट पर 14 शर्तें रखने पर ब्रिटिश नौकरशाही में घबराहट फैल गयी कि जिन्ना कही अपने साम्प्रदायिक रूख का त्याग न कर दे। हैली ने इरविन को लिखा–' मुसलमान पृथक निर्वाचन क्षेत्र का परित्याग कर सकते है – इस संबंध में वास्तव में पूर्ण अवरोध है।[20] गोलमेज सम्मेलन में स्पष्टता देख गया कि निजी प्रतिनिधियों तथा नौकरशाही के बीच गठबंधन हो गया है, जिससे मुस्लिम साम्प्रदायिकता को अत्यधिक बढ़ावा मिला। मुसलमान 1931 के सविनय अवज्ञा आंन्दोलन से अलग रहे।[21]

उपागम – यद्यपि 1900–1930 तक व्यवहारिक उपागम, अनुभववादी उपागम का राजीनतिक अध्ययन के लिए कोई प्रचलन नहीं था। न ही लासवैल का मनः विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अध्ययन का माध्यम था, लेकिन जिस रूप में भारत में ब्रिटिश नौकरशाही ने भारतीय राजनीति के अभिकर्ताओं का अध्ययन किया शोध किया तथा निष्कर्ष निकाले सरल है कि ब्रिटिश नौकरशाही प्रशासन एक निश्चित वैज्ञानिक पद्धति पर टिका हुआ था। वे न केवल कुशल कूटनीतिज्ञ बरन दक्ष, अनुभववादी योग्य मानवशास्त्री व मनोवैज्ञानिक भी थे। जिद्दी, धमंडी, अहंकारी होने के कारण सर्वोच्चता भी भावना से पीड़ित थे।

उद्देश्य – इतिहासकारों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में ब्रिटिश सेवी वर्ग की भूमिका को पर्याप्त स्थान नही दिया है। इस अन्याय का प्रतिकार करना ही शोध का उद्देश्य है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का अबतक विभिन्न संदर्भों में विश्लेषण किया जा चुका है। जिसमें राष्ट्रवादी, साम्प्रदायिक व प0 साम्राज्यवादी, दृष्टिकोण प्रमुख है, परन्तु IOL के नये अभिलेख जारी हुए है, के व्यक्तिगत पत्रों, डायरी, अर्धशासकीय पत्रों से स्पष्ट होता है कि साम्प्रदायिक राजनीति को निर्धारित करने में ब्रिटिश सेवी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संबंधित तथ्यों को सामने लाने का प्रयत्न किया गया है। इन अधिकारियों में, जेम्स थाम्पसन, केम्पसन, मेकडोनाल्ड, लायल आकलैण्ड, हीवेट, बटलर, हेल,डनपल, स्मिथ ब्रेडक आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

महत्व – आखिर समन्दर से आकर अंग्रेजों ने भारत पर मनचाहे ढंग से और बड़ी चतुराई से कैसे राज्य किया ? सेवीवर्थ के वर्तमान अध्ययन से स्पष्ट है कि सभी लगभग नौकरशाहों ने सर्वप्रथम शासन प्रशासन संभलने से पूर्व भारतीयों के प्रत्येक सम्प्रदाय, समूह, वर्ग, गुट कीक मनःस्थिति का अध्ययन किया। इसके बाद ठोस व अचूक निर्णय लिए। नौकरशाही के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

आचरण में अन्तविरोध देखने को मिला जैसे– सर मेकडानल्ड कुन्ठाओ व पूर्वग्रहों से पीड़ित रहते थे। मनः स्थिति का नतीजा निकला के मुसलमानों मे न केवल अलगाववाद की प्रवृति पनपी बरन हिन्दूओं में भी उग्रराष्ट्रवाद की भावना जाग्रह हुई। दोनों ही प्रवृत्तियों ने साम्प्रदायकता को जन्म दिया। विभाजन के रूप में सामने आया ब्रिटिश नौकरशाही की अंतिम उपज मो0 अली जिन्ना थे। सेवी वर्ग जिन्ना को न पसंद करते हुए उनके समीप रहता था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विलियम हन्टर – 'द इंडियन मुसलमान'।
2. हीरा सिंह भाकुनी –'पं0बद्रीदत्त पाण्डे' – पृष्ठ 44.
3. आर0गोपाल– 'इंडियन मुस्लिम ए पोलिटिकल हिस्ट्री (1858–1947).
4. होमपोलिटिकल अगस्त 1921, नम्बर 18, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखाकार, नई दिल्ली।
5. एच0मिन्ध्र गुमरी हव्इट, का लार्डरीडिंग के पत्र, होम पोलिटिकल 1923 न0 /56 भा0रा0अभि0।
7. सर मेल्कम हेली का वायसराय रीडिंग को पत्र– हो0पो0 1923,भारा0रा0अभि0।
8. रीडिंग का हेली को पत्र 1923,भारा0रा0अभि0।
9. हेली का वायसराय रीडिंग को पत्र, नवंबर 1923,भारा0रा0अभि0।
10. जे0कुनिन0 पोलिटिकल इण्डिया पृष्ठ – 18.
11. लार्ड ओलिवियर का भाषण, 28 जुलाई 1926, ताराचंद, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास पृष्ठ 12.
12. लखनऊ के आयुक्त सेसेल्स का संयुक्त प्रान्त की सरकार के मुख्य सचिव को पत्र, होम0पो 1922, पृष्ठ– 136, भारा0रा0अभि0।
13. बटलर द्वारा पॉयनियर मेल को दिया गया साक्षात्कार 1922 10 आर0/नं0 116/13, आ0 राज अभिलेखाकर।
14. होम0 पोलिटिकल 1924 न0 17, प्ट भा0रा0अभिलेखाकार।
15. सर हारकोर्ट बटलर, इण्डिया परसिसटेन प्ट नं0 116/109 नं0 5323 भा0रा0अभिलेखाकार।
16. सर हारकोर्ड बटलर 'इण्डिया परसिसटेन्ट लंदन 1931 IOR /फा0नं0 116/86 भा0रा0अभि0।
17. भारत सचिव बर्कनहेड का वायसराय इर्विन को पत्र 19 जनवरी 1928.
18. स्टेनले वालपोर्ट, जिन्ना ऑफ पाकिस्तान पेज 93.
19. सर मेलक्म हेली का दर्विन को पत्र, 14 नवंम्बर 1930 IOR /फा0न0 220/34 भा0रां0अ0।
20. हेली का इर्विन को पत्र दिसम्बर 1930 IOR लंदन, 20/34, जिला ऑफ पाकिस्तान के पृष्ठ 22 से उद्धृत।
21. पेपर्स– बटलर पेपर्स, वेस्टर्न पेपर्स, हेली पेपर्स आदि।

*****